आधुनिक काव्यधारा

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

363

राजकमल प्रकाशन

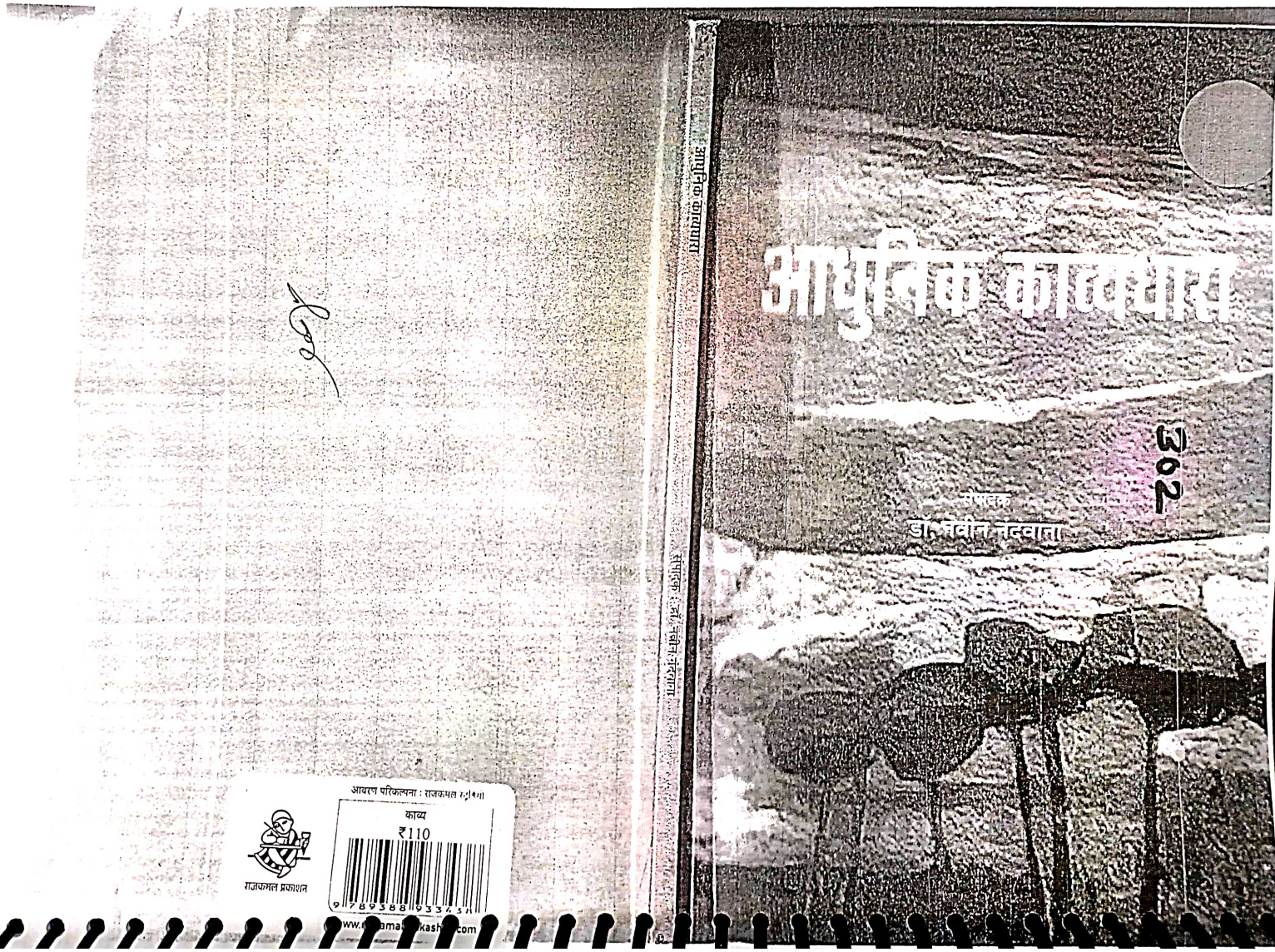

आधुनिक काव्यधारा

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

302

आधुनिक काव्यधारा
संपादक : डॉ. नवीन नंदवाना

आवरण परिकल्पना : राजकमल स्टूडियो
काव्य
₹110
राजकमल प्रकाशन
9789388933[illegible]
www.[illegible]amal[illegible]kash[illegible]com

आधुनिक काव्यधारा

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

३९३

राजकमल प्रकाशन

ISBN : 978-93-88933-43-8

मूल्य : ₹ 110

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला संस्करण : 2019

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com
ई-मेल : info@rajkamalprakashan.com

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

AADHUNIK KAVYADHARA
Edited by Dr. Naveen Nandwana

अनुक्रम

भूमिका 7
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' 23
श्याम सन्देश 26
राधा सन्देश 28
मैथिलीशरण गुप्त 32
भारतवर्ष 36
रे मन, आज परीक्षा तेरी 38
कैकेयी का पश्चाताप 40
जयशंकर प्रसाद 47
ले चल मुझे भुलावा देकर 51
बीती विभावरी जाग री 52
पेशोला की प्रतिध्वनि 53
अरी वरुणा की शान्त कछार 56
चिन्ता 58
सुमित्रानन्दन पंत 61
मोह 65
मैं नहीं चाहता चिर-सुख 66
मौन-निमंत्रण 67
नौका विहार 70
ग्राम श्री 73
ताज 77
द्रुत झरो 78
बापू के प्रति 79
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' 84
सखि, वसन्त आया 88
संध्या सुन्दरी 89

तोड़ती पत्थर 91
विधवा 93
बादल राग 95
स्नेह-निर्झर बह गया है 97
राम की शक्ति पूजा 98
महादेवी वर्मा 101
कौन पहुँचा देगा उस पार 105
वह कौन है? 107
क्या पूजन क्या अर्चन रे! 108
वसन्त-रजनी 109
जीवन विरह का जलजात 111
वीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ! 112
मैं नीर-भरी दुःख की बदली! 113
यह मन्दिर का दीप 114
रामधारी सिंह 'दिनकर' 116
बालिका से वधू 119
कविता की पुकार 123
वह कौन रोता है 126
समर शेष है 132
कृष्ण की चेतावनी 134
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' 138
कतकी पूनो 142
नदी के द्वीप 143
कलगी बाजरे की 145
बावरा अहेरी 147
यह दीप अकेला 149
साँप 150
हिरोशिमा 151

भूमिका

हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा पर एक दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल से ही विविध कवियों और लेखकों ने साहित्य सृजन कर इसके वैभव को बढ़ाया। हिन्दी का पहला कवि सरहपाद को मानते हुए अधिकतर विद्वान हिन्दी साहित्य का आरम्भ सातवीं शताब्दी मध्य से मानते हैं। इसके बाद का कालखंड भक्तिकाल कहलाया जिसमें कबीर, जायसी, सूर और तुलसी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति चेतना का प्रसार किया। रीतिकालीन समय में कई आचार्यों और कवियों ने साहित्य सृजन का कार्य किया। केशव, चिन्तामणि, देव, बिहारी, पद्माकर, भूषण, घनानन्द आदि इस धारा के प्रमुख कवि हैं। इस कालखंड की काव्यधाराओं को रीतिबद्ध, रीतिमुक्त और रीतिसिद्ध में बाँटा जाता है।

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल अपनी इन पूर्ववर्ती तीनों कालों की काव्यधारा से कुछ विशेष प्रकार का रहा। यहाँ आते-आते कवियों के काव्य विषयों में परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा। आधुनिक कवि न तो भक्तिकालीन कवियों की तरह केवल भक्ति आराधना में तल्लीन रहकर अपने अगले जन्म को सुधारने और मोक्ष की प्राप्ति में तल्लीन रहा और न ही रीतिकालीन कवियों की भाँति किसी आश्रयदाता राजा के यश, वैभव, सौन्दर्य और वीरता की सच्ची-झूठी प्रशंसा में लगा रहा। आधुनिक काल का यह कवि अब मोक्ष की कामना और आश्रयदाता की प्रशंसा से अलग होकर देश, समाज, धर्म आदि के सुधार, बाहरी ताकतों की गुलामी से मुक्ति और शोषण व अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने लगा। उसका दृष्टिकोण अब बदल गया। उसकी कविता के विषय और भाषा दोनों में परिवर्तन द्रष्टव्य होने लगा।

आधुनिक काव्यधारा के विकास और विविध सोपानों पर बात करने से पहले यह जानना जरूरी होता है कि साहित्य के इतिहास और विकास क्रम पर बात करते समय आधुनिक शब्द को किन अर्थों में ग्रहण किया जाए। डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रन्थ में उन्होंने आधुनिक शब्द के दो अर्थ बताए हैं। पहला 'मध्यकाल से भिन्नता' और दूसरा 'नवीन इहलौकिक दृष्टिकोण'।

में समाहित होने लगते हैं तभी तो इन कवियों को लगता है कि—''हम सब के दामन पर दाग।''

प्रयोगवाद से भिन्न नई कविता में कुछ अलग प्रकार की प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। यह कविता क्षण का अधिकतम उपयोग करते हुए भी किसी क्षण का ही नहीं बल्कि जीवन की व्यापकता का वर्णन करती है। ये कवि जीवन से भागते नहीं हैं बल्कि इनका जीवन में पूरा विश्वास है। तभी तो यहाँ का कवि कहता है कि—''इस दुखी संसार में जितना बने हम सुख लुटा दें।'' यह कविता लघु मानव को महत्ता प्रदान करती है। जो व्यक्ति आज तक किसी कारण उपेक्षित रहा। यह कविता उसे केन्द्र में मानकर उसके सुख-दुख, पीड़ा-दर्द को व्यक्त करती है। बौद्धिकता के साथ यहाँ यथार्थ चित्रण दिखाई पड़ता है। इस कविता की विषयवस्तु में भी वैविध्य है। शिल्प की नूतनता के साथ-साथ ये कवि समाज के प्रति अपने दायित्वों के निर्वहन के लिए भी तत्पर हैं। तभी तो मुक्तिबोध लिखते हैं कि—''नई कविता, वैविध्यमय जीवन के प्रति प्रतिक्रिया आत्मचेतस की है।'' यह कविता नए भावबोध को व्यक्त करने वाली है। लोक से जुड़ाव इस कविता की अपनी विशेषता है।

—डॉ. नवीन नंदवाना

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

आधुनिक हिन्दी कविता के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर और द्विवेदीयुगीन कविता के प्रमुख कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947) का जन्म उत्तरप्रदेश के निजामाबाद (आजमगढ़) में हुआ। इनके पिता का नाम भोलासिंह और माता का नाम रुक्मिणी देवी था। इनके पूर्वज गुरुदयाल ने सिख धर्म अपना लिया था, इसी कारण इनके नाम के साथ सिंह जुड़ने लगा। कई वर्षों तक कानूनगो के पद पर रहने के बाद आपने काशी विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य भी किया। ये हिन्दी की आधुनिक काव्यधारा के प्रमुख कवियों में से एक हैं। आपने काव्य रचना के साथ-साथ हिन्दी गद्य की विविध विधाओं में भी लेखन कार्य किया। हिन्दी के अतिरिक्त आपको संस्कृत, फारसी और उर्दू आदि का भी ज्ञान था। हिन्दी की अद्‌भुत सेवा के कारण हिन्दी समाज ने आपको 'कवि सम्राट' की उपाधि से विभूषित किया।

भाव, भाषा, छन्द और अभिव्यंजना कौशल आदि के आधार पर हरिऔध ने हिन्दी भाषा को एक श्रेष्ठता प्रदान करने में महती भूमिका अदा की। हरिऔध ही वो महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य को खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' भेंट किया। 'प्रियप्रवास' (1914) और 'वैदेही वनवास' (1940) आपके द्वारा रचित महाकाव्य हैं। इनके अतिरिक्त आपने 'चुभते चौपदे', 'चोखे चौपदे', 'रस-कलश', 'पारिजात' और 'बोलचाल' आदि प्रमुख काव्य-कृतियों की रचना की। आपने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ', 'अधखिला फूल' और 'वेनिस का बाँका' (अनूदित) नामक उपन्यासों की भी रचना की।

हरिऔध के काव्य में भाषा की सरलता, सहजता और प्रांजलता विद्यमान है। प्रसंग के अनुसार निरलंकार भाषा का प्रयोग करने वाले हरिऔध ने 'प्रियप्रवास' में संस्कृत के वर्णवृत्तों का सहारा लिया है। 'प्रियप्रवास' खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है, जो कि राधा और कृष्ण के चरित्र को परम्परागत छवि से भिन्न रूप में लोकमंगल के आधार पर चित्रित करता है। वहीं उनका ग्रन्थ 'वैदेही वनवास' सीता के वनवास की घटना पर आधारित है। ये दोनों ही काव्य ग्रन्थ खड़ीबोली में रचित हैं जबकि 'रस-कलश' की रचना ब्रजभाषा में हुई है। यह एक रीति ग्रन्थ है। यह इस बात को भी दर्शाता है कि हरिऔध का खड़ी बोली हिन्दी और ब्रजभाषा

306